"सब कुछ आपे-आप हैं...!"

1. नामै ही ते सभ किछ होआ - बिन सतिगुर नाम न जापै । गुर का सबद महा रस मीठा - बिन चाखे साद न जापै । कउडी बदलै जनम गवाइआ - चीनस नाही आपै । गुरमुख होवै ता एको जाणै - हउमै दुख न संतापै ।

अर्थ:- हे भाई ! परमात्मा के नाम से सब कुछ (सारा रौशन आत्मिक जीवन) होता है, पर गुरू (शब्द गुरु विशेष) की शरण पड़े बिना नाम(रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष) की कद्र नहीं पड़ती । गुरू

का शबद बड़े रस वाला है मीठा है, जब तक इसे चखा ना जाए, स्वाद का पता नहीं चल सकता । जो मनुष्य (गुरू के शबद के द्वारा) अपने आत्मिक जीवन को पहचानता नहीं, वह अपने मानस जन्म को कौड़ी के बदले (व्यर्थ ही) गवा लेता है । जब मनुष्य गुरू के बताए हुए राह पर चलता है, तब एक परमात्मा के साथ गहरी सांझ डालता है, और, (तब) उसे अहंकार का दुख नहीं सता सकता ।

बलिहारी गुर अपणे विटहु - जिन साचे सिउ लिव लाई । सबद चीन्ह आतम परगासिआ - सहजे रहिआ समाई ।

अर्थ:- हे भाई ! मैं अपने गुरू से सदके जाता हूँ, जिसने (शरण आए मनुष्य की) सदा-स्थिर रहने वाले परमात्मा के साथ प्रीति जोड़ दी (भाव, जोड़ देता है) । गुरू के शबद से सांझ डाल के मनुष्य का आत्मिक जीवन चमक उठता है, मनुष्य आत्मिक अडोलता में लीन रहता है ।

गुरमुख गावै - गुरमुख बूझै - गुरमुख सबद बीचारे । जीउ पिंड सभ गुर ते उपजै - गुरमुख कारज सवारे । मनमुख अंधा अंध कमावै - बिख खटे संसारे । माइआ-मोह सदा दुख पाए - बिनु गुर अत पिआरे ।

अर्थ:- हे भाई ! गुरू की शरण पड़ने वाला मनुष्य गुरू के शबद को गाता रहता है, गुरू के शबद को समझता है, गुरू के शबद को विचारता है । उस मनुष्य की जिंद उसका शरीर गुरू की बरकत से नया आत्मिक जन्म लेता है, गुरू की शरण पड़ कर वह अपने सारे काम सँवार

लेता है । अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य माया के मोह में अंधा हुआ रहता है, वह सदैव अंधों वाला काम ही करता रहता है, जगत में वह वही कमाई करता है जो उसके आत्मिक जीवन के लिए जहर बन जाती है । प्यारे गुरू की शरण पड़े बिना वह मनुष्य माया के मोह में फंस के सदा दुख सहता रहता है ।

सोई सेवक जे सतिगुर सेवे - चालै सतिगुर भाए । साचा सबद सिफत है साची - साचा मंन वसाए । सची बाणी गुरमुख आखै - हउमै विचहु जाए । आपे दाता करम है साचा - साचा सबद सुणाए ।

अर्थः- जो मनुष्य गुरू की शरण आ पड़ता है, गुरू की रजा में चलने लग जाता है वह मनुष्य परमात्मा का भक्त बन जाता है । सदा-स्थिर प्रभू की सिफत-सालाह की बाणी, सदा-स्थिर प्रभू की सिफत-सालाह (उसके मन में टिकी रहती है), वह मनुष्य सदा कायम रहने वाले मनुष्य को अपने मन में बसाए रखता है । गुरू के बताए हुए राह पर चलने वाला मनुष्य सदा-स्थिर प्रभू की सिफत-सालाह की बाणी उचारता रहता है (जिसकी बरकत से उसके) अंदर से अहंकार दूर हो जाती है । उसे यकीन बन जाता है कि परमात्मा स्वयं सब दातें देने वाला है, परमात्मा की बख्शिश अटॅल है । वह मनुष्य औरों को भी सदा-स्थिर प्रभू के सत्य वचन और सिफत-सालाह सुनाता रहता है ।

गुरमुख घाले - गुरमुख खटे - गुरमुख नाम जपाए । सदा अलिपत साचै रंग राता - गुर कै सहज सुभाए ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य गुरू के बताए हुए मार्ग पर चलता है, वह नाम सिमरन की मेहनत करता है, नाम-धन कमाता है, और, औरों को भी नाम जपवाता है । सदा-स्थिर प्रभू के प्रेम रंग में रंगीज के वह मनुष्य सदैव (माया के मोह से) निर्लिप रहता है । गुरू के दर पर रह के वह मनुष्य आत्मिक अडोलता में टिका रहता है, प्रभू के प्रेम में लीन रहता है ।

मनमुख सद ही कूड़ो बोलै - बिख बीजै बिख खाए । जमकाल बाधा त्रिसना दाधा - बिन गुर कवण छडाए ।

अर्थः- पर, अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य सदा ही झूठ बोलता है, (आत्मिक जीवन के खत्म कर देने वाली माया के मोह का) जहर बीजता है, और वही जहर खाता है (उसी जहर को अपने जीवन का सहारा बनाए रखता है) । वह मनुष्य आत्मिक मौत की फाहियों में बँधा रहता है, तृष्णा की आग में जला रहता है । (इस बिपता में से उसको) गुरू के बिना और कोई नहीं छुड़ा सकता ।

सचा तीरथ जित सत सर नावण - गुरमुख आप बुझाए । अठसठ तीरथ गुर सबद दिखाए - तित नातै मल जाए । सचा सबद सचा है निरमल - ना मल लगै न लाए । सची सिफत सची सालाह - पूरे गुर ते पाए ।

अर्थः- जो मनुष्य गुरू की शरण आ पड़ता है उसको प्रभू स्वयं ये सूझ बख्शता है कि जिस सच्चे सरोवर में स्नान करना चाहिए - वह सदा कायम रहने वाला तीर्थ गुरू का शबद ही है - गुरू के शबद में ही उसे प्रभू

अढ़सठ तीर्थ दिखा देता है । उस गुरू-शबद-तीर्थ (रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष) में नहाने से विकारों की मैल उतर जाती है । उस मनुष्य को यकीन बन जाता है कि गुरू का शबद ही सदा कायम रहने वाला और पवित्र तीर्थ है (उसमें स्नान करने से विकारों की) मैल नहीं लगती, (वह तीर्थ और) मैल नहीं चिपकाता । वह मनुष्य पूरे गुरू के पास से सदा-स्थिर रहने वाले परमात्मा की सिफत-सालाह प्राप्त कर लेता है ।

तन-मन सभ किछ हरि तिस केरा - दुरमत कहण न जाए । हुकम होवै ता निरमल होवै - हउमै विचहु जाए । गुर की साखी सहजे चाखी - त्रिसना अगन बुझाए । गुर कै सबद राता सहजे माता - सहजे रहिआ समाए ।

अर्थः- पर, जो मनुष्य गुरू की शरण नहीं पड़ता, वह (मनुष्य) खोटी मत के कारण ये नहीं कह सकता कि हमारा ये शरीर हमारा ये मन सब कुछ उस प्रभू का ही दिया हुआ है । जब परमात्मा की रजा होती है (मनुष्य गुरू की शरण पड़ता है) उसका मन पवित्र हो जाता है (उसके) अंदर से अहंकार दूर हो जाता है वह मनुष्य आत्मिक अडोलता में टिक के गुरू के उपदेश का आनंद लेता है, (गुरू का उपदेश उसके अंदर से) तृष्णा की आग बुझा देता है । वह मनुष्य गुरू के शबद में रंगा जाता है, आत्मिक अडोलता में मस्त हो जाता है, आत्मिक अडोलता में ही लीन रहता है ।

हरि का नाम सत कर जाणै - गुर कै भाइ पिआरे । सची वडिआई गुर ते पाई - सचै नाइ पिआरे । एको सचा सभ मह

वरतै - विरला को वीचारे । आपे मेल लए ता बखसे - सची भगत सवारे ।

अर्थः- जो मनुष्य प्यारे गुरु के प्रेम में टिका रहता है, वह ये बात समझ लेता है कि परमात्मा का नाम ही सच्चा साथी है । वह मनुष्य परमात्मा की सदा-स्थिर रहने वाली महिमा गुरु से प्राप्त कर लेता है, वह सदा-स्थिर प्रभु के नाम में प्यार करने लग जाता है । कोई विरला मनुष्य (गुरु की शरण पड़ के) ये विचार करता है कि सारी सृष्टि में सदा-स्थिर रहने वाला परमात्मा ही बसता है । (ऐसे मनुष्य को) जब प्रभु स्वयं ही अपने चरणों में जोड़ता है, तो उस पर बख्शिश करता है, सदा-स्थिर रहने वाली अपनी भक्ति दे के उसका जीवन सोहाना बना देता है ।

सभो सच सच सच वरतै - गुरमुख कोई जाणै । जमण मरणा हुकमो वरतै - गुरमुख आप पछाणै । नाम धिआए ता सतिगुरु भाए - जो इछै सो फल पाए । नानक तिस दा सभ किछ होवै - जि विचहु आप गवाए । (753-754)

अर्थः- हे भाई ! कोई विरला मनुष्य गुरु की शरण पड़ के समझता है कि हर जगह सदा कायम रहने वाला परमात्मा ही काम कर रहा है । जगत में पैदा होना मरना भी उसी के हुक्म में चल रहा है । गुरु की शरण पड़ने वाला वह मनुष्य अपने आत्मिक जीवन को पड़तालता रहता है । जब वह मनुष्य परमात्मा के नाम का स्मरण शुरू करता है तो वह गुरु को प्यारा लगने लग जाता है, फिर वह जो भी मुराद माँगता है वही हासिल कर लेता है । हे नानक ! (कहः) जो मनुष्य (गुरु की शरण

पड़ कर) अपने अंदर से स्वै भाव दूर कर लेता है, उसके आत्मिक जीवन का सारी संपत्ति बची रहती है ।

2. आपे रसीआ - आप रस - आपे रावणहार । आपे होवै चोलड़ा - आपे सेज भतार ।

अर्थः- प्रभु स्वयं ही रस भरा पदार्थ है, स्वयं ही (उस में) रस है, और स्वये ही उस स्वाद का आनंद लेने वाला है । प्रभु खुद ही स्त्री बनता है, खुद ही सेज, और खुद ही (भोगने वाला) पति है ।

रंग रता मेरा साहिब - रव रहिआ भरपूर ।

अर्थः- मेरा मालिक प्रभु प्यार में रंगा हुआ है, वह (सारी सृष्टि में) पूर्ण तौर पर व्यापक है ।

आपे माछी मछुली - आपे पाणी जाल । आपे जाल मणकड़ा - आपे अंदर लाल ।

अर्थः- प्रभु खुद ही मछलियां पकड़ने वाला है, खुद ही मछली है । खुद ही पानी है (जिसमें मछली रहती है), खुद ही जाल है (जिससे मछली पकड़ी जाती है) । प्रभु ही उस जाल के मणके है, खुद ही उस जाल में मास की बोटी है (जो मछली को जाल की ओर प्रेरती है) ।

आपे बहु बिध रंगुला - सखीए मेरा लाल । नित रवै सोहागणी - देख हमारा हाल ।

अर्थः- हे सहेलियो ! मेरा प्यारा प्रभु स्वयं ही कई तरीकों से अटखेलियां करने वाला है । भाग्यशाली जीव-स्त्रीयों को वह पति प्रभु सदा मिलता है । पर मेरे जैसियों का हाल देख (कि हमें कभी दीदार नहीं होता)।

प्रणवै नानक बेनती - तू सरवर तू हंस । कउल तू है कवीआ तू है - आपे वेख विगस । (23)

अर्थः- हे प्रभु ! नानक (तेरे दर पर) अरदास करता है (तू हर जगह मौजूद है, मुझे भी दीदार दे) तू ही सरोवर है, तू ही सरोवर पे रहने वाला हंस है । सूरज की रौशनी में खिलने वाला कमल का फूल भी तू ही है और चाँद की चाँदनी में खिलने वाली कमीं भी तू ही है (अपने जमाल को ओर अपने जलाल को) देख के तू खुद ही खुश होने वाला है ।

3. कर बंदे तू बंदगी - जिचर घट मह साहु । कुदरत कीम न जाणीऐ - वडा वेपरवाह ।

अर्थः- हे बँदे ! जब तक तेरे शरीर में सांस चलती है तब तक उस मालिक की बँदगी करता रह । हे भाई ! उस मालिक की कुदरत का मूल्य नहीं समझा जा सकता, वह सबसे बड़ा है उसे किसी की अधीनता नहीं ।

मिहरवान साहिब मिहरवान । साहिब मेरा मिहरवान । जीअ सगल कउ देइ दान ।

अर्थः- हे भाई ! मेरा मालिक प्रभु सदा दया करने वाला है, सदा दयालु है, सदा दयालु है । वह सारे जीवों को (सब पदार्थों का) दान देता है ।

तू काहे डोलह प्राणीआ - तुध राखैगा सिरजणहार । जिन पैदाइस तू कीआ - सोई देइ आधार ।

अर्थः- हे भाई! तू क्यों घबराता है ? पैदा करने वाला प्रभु तेरी (जरूर) रक्षा करेगा । जिस (प्रभु) ने तुझे पैदा किया है, वही (सारी सृष्टि को) आसरा (भी) देता है ।

जिन उपाई मेदनी - सोई करदा सार । घट-घट मालक दिला का - सचा परवदगार ।

अर्थः- हे भाई ! जिस परमात्मा ने सृष्टि पैदा की है, वही (इसकी) संभाल करता है । हरेक शरीर में बसने वाला प्रभु (सारे जीवों के) दिलों का मालिक है, वह सदा कायम रहने वाला है, और, सब की पालना करने वाला है ।

तू समरथ अकथ अगोचर - जीउ पिंड तेरी रास । रहम तेरी सुख पाइआ - सदा नानक की अरदास । (724)

अर्थः- हे प्रभु ! तू सब ताकतों का मालिक है, तेरा स्वरूप बयान नहीं किया जा सकता, ज्ञानेन्दिंयों के द्वारा तुझ तक पहुँच नहीं की जा सकती । (हम जीवों का ये) शरीर और जिंद तेरी ही दी हुई पूंजी है । जिस मनुष्य पर तेरी मेहर हो उस को (तेरे दर से बँदगी का) सुख मिलता है । नानक की भी सदा तेरे दर पे यही अरदास है (कि तेरी बँदगी का सुख मिले) ।

४. बंदे बंदगी इकतीआर । साहिब रोस धरउ कि पिआर ।

अर्थः- हे बंदे ! तू (प्रभु की) भक्ति स्वीकार कर, (प्रभु-) मालिक चाहे (तेरे साथ) प्यार करे चाहे गुस्सा करे (तू इस बात की परवाह ना कर) ।

फुरमान तेरा सिरै ऊपर - फिर न करत बीचार । तुही दरीआ तुही करीआ - तुझै ते निसतार ।

अर्थ:- (हे प्रभु!) तेरा हुक्म मेरे सिर माथे पर है, मैं इसमें कोई ना-नुकर नहीं करता । ये संसार समुंदर तू खुद ही है, (इसमें से पार लंघाने वाला) मल्लाह भी तू खुद ही है । तेरी मेहर से ही मैं इसमें से पार लांघ सकता हूँ ।

नाम तेरा आधार मेरा - जिउ फूल जई है नार । कह कबीर गुलाम घर का - जीआइ भावै मार । (338)

अर्थ:- (हे प्रभु!) तेरा नाम मेरा आसरा है (इसी तरह) जैसे फूल पानी में खिला रहता है (जैसे फूल को पानी का आसरा है) । कबीर कहता है: (हे प्रभु!) मैं तेरे घर का चाकर हूँ, (ये तेरी मर्जी है) चाहे जीवित रख चाहे मार दे ।

5. तेरा किता जातो नाही - मैनो जोग कीतोई । मै निरगुणिआरे को गुण नाही - आपे तरस पइओई ।

अर्थ:- हे प्रभु ! मैं तेरे किए हुए उपकारों की कद्र नहीं समझ सकता, (उपकार की दात संभालने के लिए) तूने (खुद ही) मुझे योग्य बर्तन बनाया है । मुझ गुण-हीन में कोई गुण नहीं है । तुझे स्वयं ही मुझ पर तरस आ गया ।

तरस पइआ मिहरामत होई - सतिगुर सजण मिलिआ । नानक नाम मिलै तां जीवां - तन-मन थीवै हरिआ । (1429)

अर्थः- हे प्रभु ! तेरे मन में मेरे लिए दया पैदा हुई, मेरे पर तेरी मेहर हुई, तब मुझे मित्र गुरु मिला (तेरा यह उपकार भुलाया नहीं जा सकता) । (अब प्यारे गुरु से) जब मुझे (तेरा) नाम मिलता है, तो मेरे अंदर आत्मिक जीवन पैदा हो जाता है, मेरा तन मेरा मन (उस आत्मिक जीवन की इनायत से) खिल उठता है ।

गुरु - पूरा गुरु - सतगुरु - "परमात्मा" - ੧ਓ

केवल एक रागमई प्रकाशित सुगंधित तथा आकर्षित कर लेने वाली दुर्लभ आवाज विशेष है जो नाम - शब्द - बाणी - गुरबाणी अथवा "महाअमृत" के रूप में भी जानी प्रचारित की जाती है.....! (प्रत्येक काल अथवा स्थिति विशेष में भी निश्चित रूप से.....!)

मनुष्य जन्म दुर्लभ- आवश्यक जन्म विशेष में अवतरित हुई आत्मा विशेष के लिए इस इक्वेशन को निरंतर व्यावहारिक रूप से कमाना विशेष ही मनुष्यता है.....! केवल इसी हेतु इसको यह दुर्लभ आवश्यक मौका विशेष उपलब्ध हुआ है.....! "अब फैसला रूह केवल को ही करना है" कि वह किसे चूज़ विशेष करती है "फोकट का रंग तमाशा" या केवल एक "खसम रूपी दुर्लभ परमात्मा विशेष" को जो कि सब कुछ का मूल रूपी आधार विशेष है "परमसत्ता रूपी महा चेतन के स्वरूप में.....!"

- जन्म मरण का महादुखो से भरा हुआ महाअनंत काल का कुचक्र अथवा महा शाति की दुर्लभ माला विशेष.....! यह केवल आप के ही एक निजी साधारण से फैसले विशेष ही पर निर्भर करता है.....?
- प्रभु आपको सुमति बक्शे – "हुक्म पछाणे सो ऐको जाणे – बन्दा (मनुष्य) कहिये सोई.....!"

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं – गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"